ईश्वर की कहानियाँ

विष्णु नागर

सर्च - राज्य संसाधन केन्द्र, हरियाणा

जन्म 14 जून, 1950 को इन्दौर (मध्यप्रदेश) में हुआ लेकिन बचपन और विद्यार्थी जीवन शाजापुर में बीता।

आज की हिन्दी कविता, कथा तथा व्यंग्य लेखन में नागर जी ने एक मौलिक रूप प्रस्तुत किया है। सादगी और सरलता उनके व्यक्तित्व के विशेष गुण हैं। स्पष्टवादी होने के कारण सच की मार भी तीखी करते हैं। 1971 से सक्रिय पत्रकार हैं। उन्होंने नवभारत टाइम्स में लम्बे समय तक काम किया। आजकल दैनिक हिन्दुस्तान के विशेष संवाददाता है। 1982 से 1984 तक *'वाइस ऑफ जर्मनी'*, कोलोन में सम्पादन कार्य किया। जर्मनी, फ्राँस, ब्रिटेन, इटली और बेल्ज़ियम की यात्राएँ कीं। कई भारतीय तथा विदेशी भाषाओं में अनूदित। 1996 में कथा–पुरस्कार से सम्मानित।

प्रकाशित पुस्तकें : मैं फिर कहता हूँ चिड़िया, तालाब में डूबी छह लड़कियाँ, संसार बदल जायेगा, बच्चे, पिता और माँ *(कविता संग्रह)*। आज का दिन, आदमी की मुश्किल, कुछ दूर *(कहानी संग्रह)*। हमें देखती आँखें *(निबन्ध संग्रह)*। जीव–जन्तु पुराण, घोड़ा और घास *(व्यंग्य संग्रह)*।

सम्पर्क के लिए पता : ए–34, नवभारत टाइम्स अपार्टमैंट, मयूर विहार, फेज़–1, नई दिल्ली 110091.

कैरेन हेडॉक

संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के न्यूयार्क शहर में जन्म। स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयार्क, बफेलो से बायोफिज़िक्स विषय में पी.एच.डी.। प्रिन्सटन विश्वविद्यालय, हार्वार्ड विश्वविद्यालय, माऊँट साइनाई स्कूल ऑफ मेडिकल रिसर्च आदि में शोध कार्य। सन 1985 से भारत में। पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में अस्थाई रूप से कुछ समय बायोफिज़िक्स पढ़ाया। पढ़ाई के साथ–साथ चित्रकारिता सीखी। बच्चों, बड़ों और नवसाक्षरों की दर्जनों पुस्तकों एवं विभिन्न पत्रिकाओं के लिए चित्रकारिता। महिला संगठनों और सभी तरह के जनान्दोलनों में सक्रिय भागीदारी। 1987 में नागार्जुन लोक सम्मान समारोह पर विदिशा में सार्वजनिक प्रदर्शनी।

सम्प्रति: मुख्यतः शिक्षा में नवाचार और स्कूली शिक्षा में व्यापक सुधार के लिए होमी भाबा साइंस एजुकेशन सेंटर, मुम्बई और यूनेस्कों के प्रोजेक्टों में सहयोगी। समय–समय पर राष्ट्रीय और स्थानीय स्तर की शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशालाओं में मुख्य भूमिका के रूप में हिस्सेदारी।

ईश्वर की कहानियाँ

विष्णु नागर

प्रथम संस्करण : फरवरी, 2002, 1000 प्रतियाँ

परामर्श : शुभा

सम्पादन : अविनाश सैनी

सम्पादकीय सहकर्मी : नरेश प्रेरणा

प्रूफ संशोधन : मनीषा

प्रोडक्शन : अविनाश सैनी, सुभाष

चित्रांकन एवं आवरण : कैरेन हेडॉक

मुद्रक : आचार्य प्रिंटिंग प्रैस, गोहाना रोड, रोहतक।

प्रकाशक : 'सर्च' – राज्य संसाधन केन्द्र, हरियाणा।

Ishwar Ki Kahanian : *Short Stories by Vishnu Nagar*

सम्पर्क :

'सर्च' – राज्य संसाधन केन्द्र, हरियाणा

42/29, चाणक्यपुरी, नज़दीक शीला सिनेमा,
सोनीपत रोड, रोहतक–124001
फोन : 01262–44916, 57371

दो शब्द

कहते हैं कि दुनिया को ईश्वर ने बनाया है, मगर सच तो यह है कि मनुष्य भी ईश्वर को बनाता है। कितनी मूर्तियाँ, कितने गीत, कितने काव्य उसने ईश्वर को आधार बनाकर रचे हैं। विष्णु नागर भी ईश्वर को बनाने वालों में शामिल हैं। उनका ईश्वर एक इन्सान की तरह है और उसकी बहुत सी मुश्किलें तथा लाचारी भी इन्सानों जैसी ही हैं। लोकप्रतिभा भी लोकगीतों, चुटकुलों और किस्से-कहानियों में ईश्वर को अपनी कल्पना के अनुसार तरह-तरह की भूमिका में लाती रही हैं। ये कहानियाँ बड़ी लोकप्रिय हुई हैं।

विष्णु नागर की ईश्वर सम्बन्धी कहानियों को बच्चों से लेकर बूढ़ों तक ने ख़ूब पसन्द किया है। हम नवपाठकों के लिए यह किताब छाप रहे हैं। इसमें उनको कल्पना की खुशी और व्यंग्य का मज़ा भी मिलेगा। *'उलहाना'* और *'कटाक्ष'* हरियाणा की बोली-बानी में खूब रचे-बसे हैं। ये कहानियाँ भी दोनों का दिलचस्प मेल सामने रखती हैं। विष्णु नागर पिछले कुछ वर्षों से नवसाक्षरों के लिए लेखन व सम्पादन के काम से जुड़े हुए हैं।

प्रमोद गौरी

निदेशक,

'सर्च' -राज्य संसाधन केन्द्र, हरियाणा
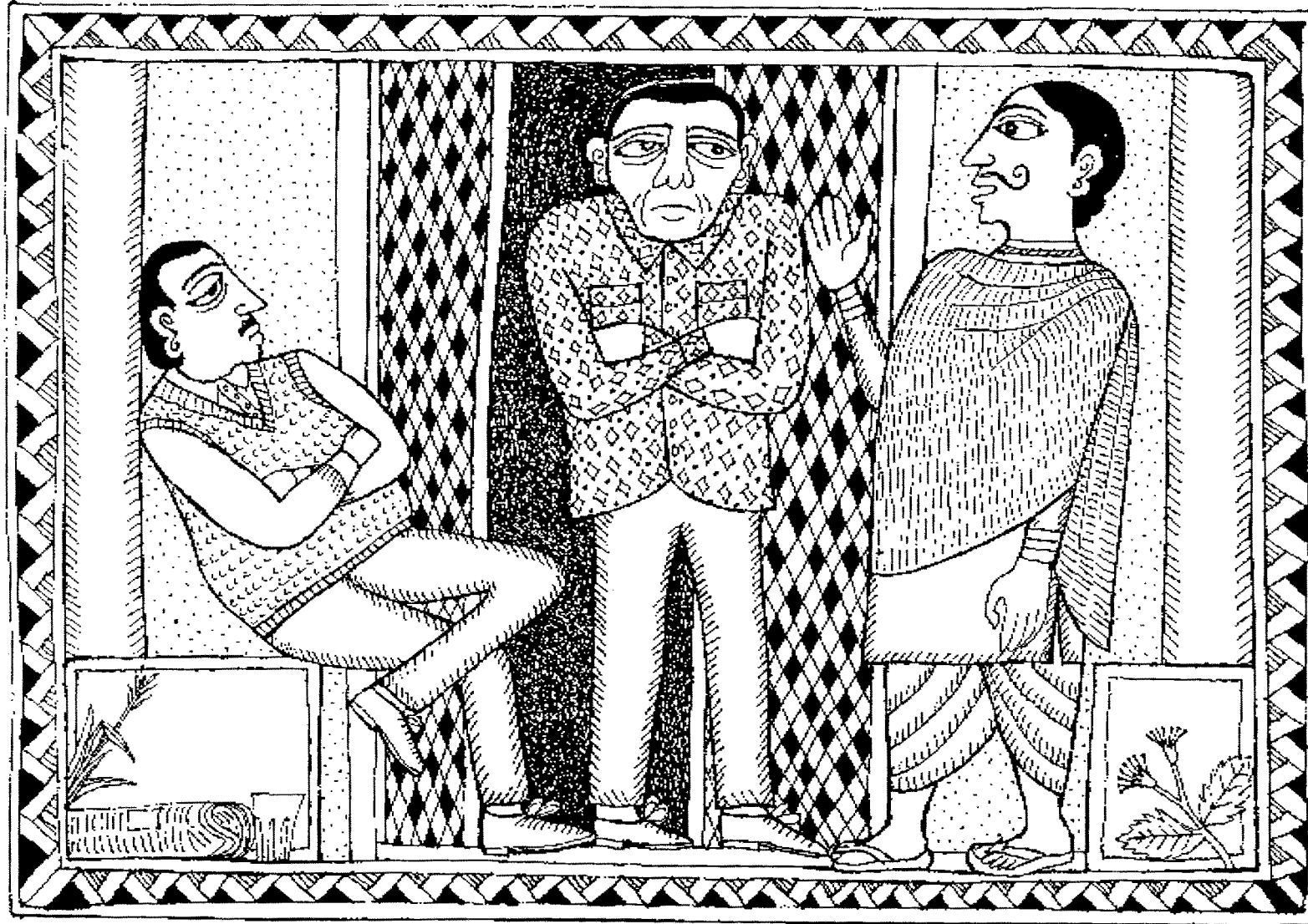
(1)

एक ऑफिस के बरामदे में दो लोग बातें कर रहे थे। एक ने कहा, 'ईश्वर की मर्ज़ी के बिना, एक पत्ता भी इधर से उधर नहीं होता।'

ईश्वर ने उन्हें टोकते हुए कहा, 'लगता है, आप दोनों इसी दफ़्तर में काम करते हैं।'

'जी हाँ, यह सच है', एक ने कहा।

'तभी,' ईश्वर बोले, लेकिन ईश्वर की मान्यता है कि उसकी मर्ज़ी के बिना, फाइलें ज़रूर इधर से उधर हो सकती हैं।'

'इसका क्या सबूत है ?' उन्होंने पूछा।

'इसका सबूत यह है कि मैं ख़ुद ईश्वर हूँ,' और यह कहकर वे अंतर्धान हो गए।

इस पर एक ने दूसरे से कहा, 'इसका मतलब यह है कि ईश्वर भी इस सत्य को जानता है।'

एक और आदमी ने, जो बीड़ी पी रहा था, टोकते हुए कहा, 'आदमी भी यह सत्य जानता है।' इस पर उन दोनों ने पूछा, 'भाईसाहब, क्या आप भी ईश्वर हैं ?'

आदमी ने कहा, 'नहीं, क्योंकि मैं अन्तर्धान नहीं हो सकता।'

ईश्वर ने धरती पर आते समय सोचा था कि यहाँ ज़्यादा ख़र्च नहीं होगा। मगर जो साथ लाए थे, सब ख़र्च हो गया।

ईश्वर चाहते तो चुटकियों में पैसा पैदा कर लेते। मगर उन्होंने मेहनत-मज़दूरी करके कमाई करने की सोची। काम उन्हें मिला, लेकिन बड़ी मुश्किल से।

गर्मी के दिन थे। सब मज़दूरों को पसीना आ रहा था मगर ईश्वर को नहीं। इस पर एक मज़दूर का ध्यान गया। उसने दूसरे से कहा। दूसरे ने तीसरे को बताया। इस तरह सब मज़दूरों में बात फैल गई।

वे समझ गए कि हो न हो, ये मज़दूर के भेस में ईश्वर हैं। उन्होंने आज ही रेडियो पर गाना सुना था, 'क्या जाने किस भेस में बाबा, मिल जाए भगवान रे।'

सब मज़दूर उनके चरणों में आ-आकर गिरने लगे। भाव-विह्वल होने लगे। रोने लगे। गाने लगे। उनसे मनौतियाँ माँगने लगे।

परेशान ईश्वर का पसीना छूट गया।

(3)

एक दिन, एक शहर में ईश्वर ने सुना कि एक औरत बहुत अच्छे रसगुल्ले बनाती है और आज उसने बनाए हैं। ईश्वर उस स्त्री के पति के मित्र का रूप धरकर उसके घर गए। पति उस समय नहीं था। स्त्री और ईश्वर ने दीन-दुनिया की ख़ूब बातें कीं।

अंततः वह स्त्री रसोईघर में गई और चाय बनाकर ले आई। अब तो ईश्वर को बेशर्म होकर कहना पड़ा, 'भाभीजी, बहुत दिनों से आपने रसगुल्ले नहीं खिलाए।'

'हाँ, क्या बताएँ भैया, सब कुछ महँगा हो गया है। अब बनाने की हिम्मत नहीं पड़ती। जब बनाएँगे, तो आपको ज़रूर बनाकर खिलाएँगे।'

ईश्वर समझ गए कि सीधी उँगली से घी निकलने वाला नहीं है। वे सूक्ष्म रूप में आ गए और औरत को उसके झूठ की सजा देने के लिए सारे के सारे रसगुल्ले खा गए, जो कि उन्हें अच्छे भी बहुत लगे।

अगले दिन उस लड़की की जमकर पिटाई हुई जो बर्तन-कपड़े साफ़ करने आती थी।

(4)

ईश्वर दिल्ली से अपनी लीलाभूमि मथुरा के लिए ट्रेन पर चढ़े। वह पैसेंजर ट्रेन थी। पंडे यहीं से उनके पीछे लग लिए।

ईश्वर ने बार-बार कहा, 'भाई, हम वहाँ अपने रिश्तेदार से मिलने जा रहे हैं। हम वहाँ के पुराने वासी हैं। हमें पंडे की ज़रूरत नहीं है।' पर पंडे कह रहे थे, 'आप मथुरावासी नहीं हैं। आपको पंडे की ज़रूरत है। हम सारा काम सस्ते में करा देंगे। सारे देव-दर्शन करा देंगे। हम उन लूटनेवाले पंडों में से नहीं हैं।' इत्यादि-इत्यादि।

जब पंडे बिलकुल ही नहीं माने, तो ईश्वर को अपना असली स्वरूप दिखाना पड़ा।

तब पंडों ने कहा, 'हम आपकी आरती-स्तुति करते मगर क्या करें, धंधे का समय है। लेकिन पंडे तो आपको मथुरा स्टेशन पर भी मिलेंगे। किस-किस को आप अपना असली स्वरूप दिखाते फिरेंगे। वहाँ पंडे आपको छुट्टा छोड़नेवाले नहीं।'

ईश्वर जो सबके त्राता हैं, पंडों के डर से ट्रेन से उतर गए और फतहपुरी की धर्मशाला में वापिस आ गए।
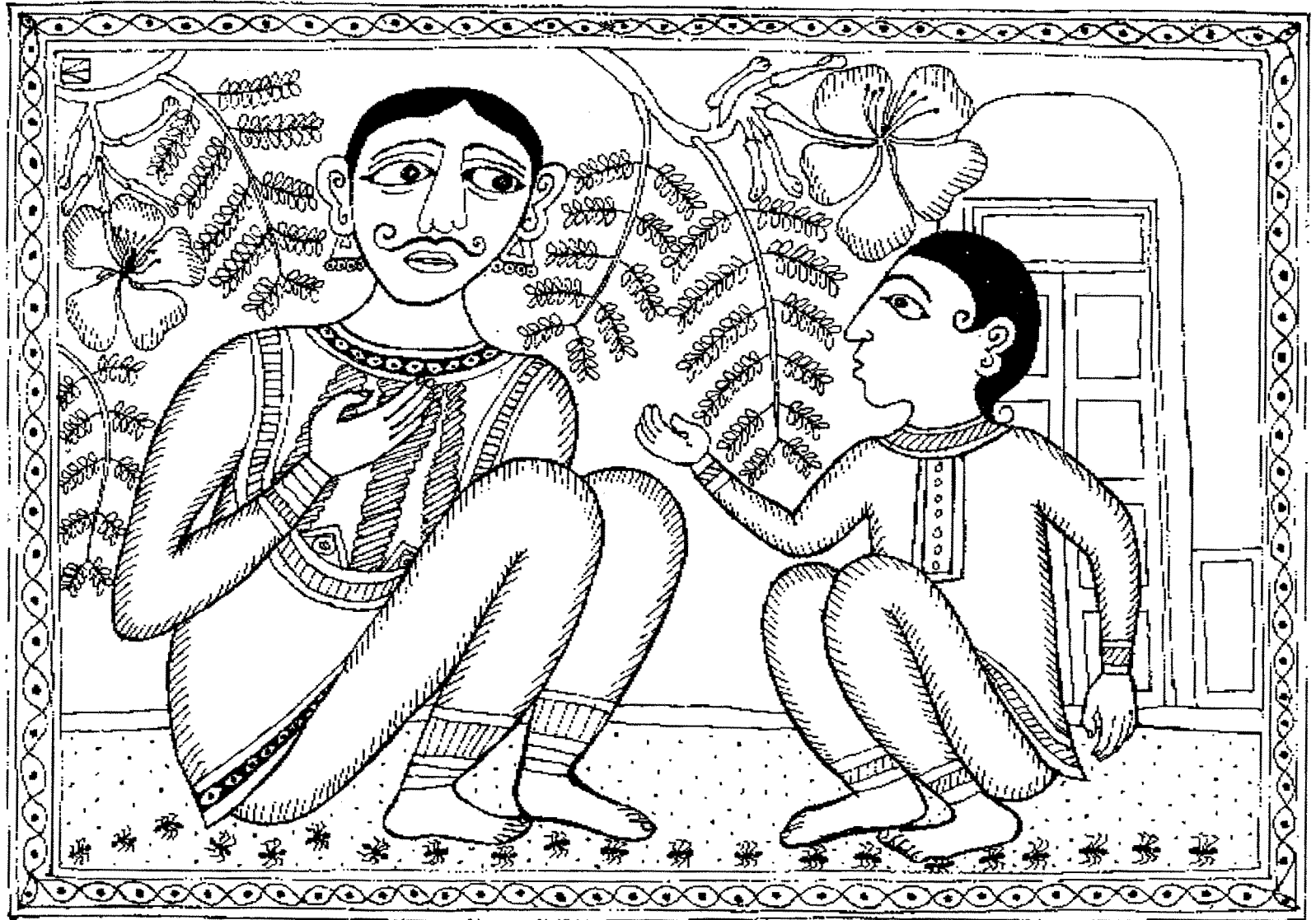
(5)

ईश्वर एक दिन सड़क पर जा रहे थे कि एक बच्चा उनके पास आया। 'अंकलजी, क्या आप ईश्वर हैं ?'

ईश्वर हतप्रभ थे। वे बोले, 'हाँ बेटा, मैं ईश्वर हूँ ! बोलो। वैसे तुमने मुझे पहचाना कैसे ? मैं तो साल भर से यहीं हूँ। आज तक तो मुझे किसी ने पहचाना नहीं !'

बच्चे ने कहा, 'मैंने तो वैसे ही पूछ लिया था। लेकिन इतना जानता हूँ कि ईश्वर ने मेरे साथ बेइंसाफ़ी की है। उसने मेरे माँ-बाप दोनों छीने हैं। मैं जानना चाहता हूँ कि ईश्वर ने ऐसा क्यों किया ?'

'इसका कोई तर्क तो नहीं है बेटा।........चलो, मैं तुम्हें एक सुंदर-सी बॉल देता हूँ।'

'बॉल-वॉल मुझे कुछ नहीं चाहिए। मुझे बताओ कि मेरे साथ ऐसा क्यों किया ?'

'अच्छा, सोने की दो मोहरें ले लो। इससे तुम्हारी ज़िंदगी आसान हो जाएगी।'

'मुझे कुछ नहीं चाहिए। मुझे अपने माँ-बाप ही चाहिएँ।'

'बेटा, मरे हुए लोग वापिस नहीं आया करते। यही दुनिया का दस्तूर है।'

'अगर वे वापिस नहीं आ सकते, तो तुमने उन्हें छीना ही क्यों ? बताओ ?'

बच्चा क्रोध में था और अपने नन्हे-नन्हे हाथों से ईश्वर को मार रहा था, काट रहा था। उनके कपड़े खींच रहा था। उन पर लातें चला रहा था।

दूर से कुछ लोग यह दृश्य देख रहे थे। उन्होंने जब मामले को ज़्यादा बिगड़ते देखा, तो वे पास आए। उन्होंने बच्चे को छुड़ाने की कोशिश की, तो वह और ज़ोर से चीखा, 'यह ईश्वर है। इसने मेरे माँ-बाप छीन लिए हैं। कहता है, वापिस नहीं दूँगा। इसे मैं पीटूँगा और मारूँगा। छोड़ दो मुझे।'

अंत में ईश्वर को अपनी जान छुड़ाने के लिए कहना पड़ा, 'यह बच्चा मुझे ईश्वर समझ बैठा है। इसे आप समझाइए।'

'जाइए-जाइए, भाई साहब। आराम से जाइए। माँ-बाप के मरने के बाद इस बच्चे ने पहली बार ऐसी हरकत की है। हम इसे समझा लेंगे।'

इस घटना के बाद से ईश्वर बच्चों से डर गए। वह सबको दिखाई देते लेकिन बच्चों को नहीं।

(6)

एक दिन ईश्वर एक मज़दूर के यहाँ अचानक पहुँचे। उन्हें अतिथि जानकर उसने उनकी ख़ूब आवभगत की।

ईश्वर उस पर बहुत मेहरबान हुए। वे चुपचाप दरी के नीचे सोने के कुछ सिक्के छोड़ आए।

बाद में मज़दूर की पत्नी ने दरी समेटी तो सिक्के निकले। उसने अपने पति को बताया। मज़दूर ईश्वर को ढूँढ़ने निकला। जहाँ-जहाँ उनके होने की संभावना हो सकती थी, वहाँ-वहाँ गया। वह क्या जानता था कि ये ईश्वर थे।

थक-हारकर वह सोने के सिक्के थाने में जमा कर आया और बदले में पुलिस की मार खा आया।

ईश्वर को जब मज़दूर की इस मूर्खता का पता चला, तो वह ख़ूब क्रोधित हुए।

उन्होंने अगले ही दिन उसकी छँटनी का नोटिस भिजवा दिया।
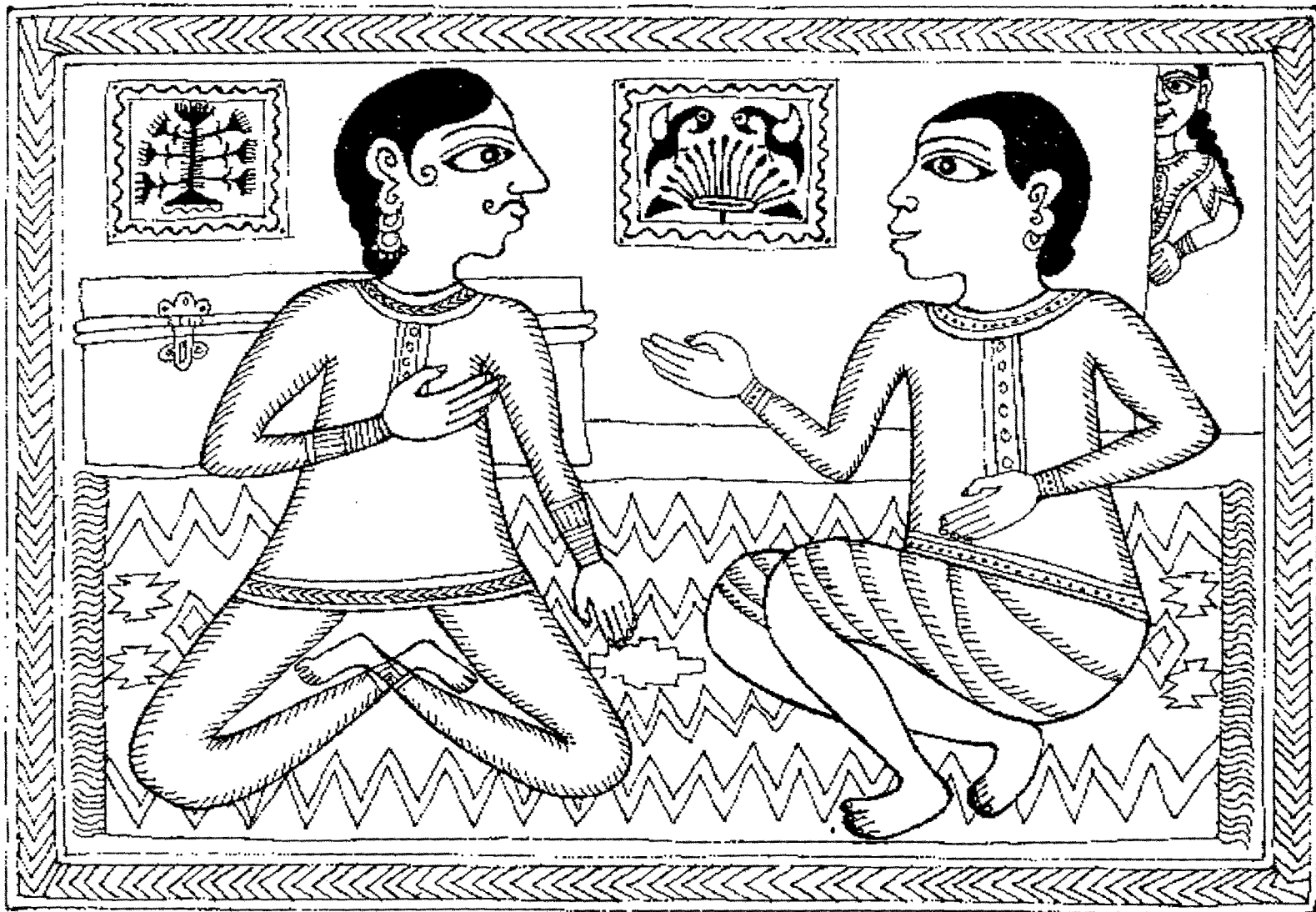
(7)

स्वर्ग में कुछ दिनों साफ़-सफ़ाई की व्यवस्था क्या गड़बड़ हुई कि वहाँ मच्छर पैदा हो गए स्वर्ग में ईश्वर के अलावा कोई था नहीं। लिहाज़ा मच्छरों ने मजबूर होकर अपने जन्मदाता को ही अपना पालनहार भी बना लिया। अर्थात् वे ईश्वर का ही ख़ून पीने लगे। ईश्वर चूँकि ईश्वर थे इसलिए उनका ख़ून भी ईश्वरीय अर्थात् अत्यंत सुस्वादु एवं तृप्तिकर था। मच्छर ख़ूब मोटे होने लगे। कछुए की तरह सख़्त और चिरायु भी होने लगे।

स्वर्ग कोई धरती तो था नहीं कि ईश्वर जिसे चाहे, जब चाहे मार देते। स्वर्ग, स्वर्ग था और उसमें किसी को मारा नहीं जा सकता था। कुछ ईश्वरों ने चोरी-छुपे मारने की कोशिश भी की, तो मच्छर मरे नहीं। वे भी ईश्वर की तरह अमर हो चुके थे। आख़िर वे ईश्वर का ख़ून रोज़ पी रहे थे।

स्थिति यह आ गई कि ईश्वर को सोचना पड़ा कि स्वर्ग में मच्छर रहें या ईश्वर। काफ़ी बहस-मुबाहिसे के बाद तय हुआ कि ईश्वर स्वर्ग में नहीं रहेंगे, पृथ्वी पर रहेंगे। वहाँ मच्छरों को मारने की इजाज़त है और उन्हें भगाना भी आसान है।